B.A. Part III ①
हिंदी प्रतिष्ठा
पत्र - 8
विशेष- अध्ययन
सगुण भक्ति काव्य

डॉ॰ अवनीश कुमार
कॉन्ट्रैक्ट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस॰ एस॰ कॉलेज,
जहानाबाद

मीराँबाई क्रमशः:

मीराँ के प्रेम में पत्नी का पूर्ण समर्पण है। वह अपने प्रियतम की विनम्र दासी है। वह उनकी बिन-मोल चेरी है —

मीरा के प्रभु हरि अविनाशी
चेरी भई बिन मोल।

मीराँ का प्रेम स्वकीया का प्रेम है। वह कृष्ण को युग-युग का पति मानती है तथा उनके आगे नाचने, उनकी सेज पर सोने और उन्हें रिझाने में उन्हें कोई संकोच नहीं —

मैं गिरिधर आगे नाचूँगी।
नाचि-नाचि पिया रसिक रिझाऊँ,
प्रेमी जन को जाँचूँगी ॥

पर कहीं-कहीं परकीया के रूप में भी उन्होंने अपने भावों को प्रकट किया है —

छाँड़ो लंगर मोरी बहियाँ गहो ना।
मैं तो नार पराये घर की
मेरे भरोसो गोपाल रहो ना ॥

मीराँ की प्रेम-साधना में संयोग की मादकता और वियोग की व्याकुलता दोनों है। मीरा को जब लगता है कि उनके प्रियतम निष्ठुर बनकर दूर चले गये हैं, उनकी सुधा बिसार दी है तो वह विरह में तड़प उठती है —

प्रभु जी तुम कहाँ गया नेहड़ो लगाय।
छोड़ गया विश्वास संगाती,
प्रेम की बाती बराय ॥

वस्तुतः विरह की तीव्रता ही माधुर्य भक्ति की कसौटी है। अपने प्रियतम से मिलन की प्रतीक्षा में मीरा रात जागकर काट देती है। उनकी आँखों से आँसू झड़ते रहते हैं। पपीहे की पुकार उनकी वेदना को जाग्रत करती है। दरद दिवानी मीरा प्रियतम

के मिलन अपने को मिटा देने देने की इच्छा मन रखती है। यहाँ विरह विरहिणी की शाश्वत वेदना है। यहाँ कोई हाय-हाय नहीं है। हिन्दी प्रेम का सैद्धान्तिक चित्रण मीरा में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। प्रेम के दर्द को ऐसा स्वरूप आँकने वाला दूसरा कवि नहीं हुआ। मीरा का दर्द स्वयं की अनुभूति है। उसने जीवन भर दर्द पिया था, इसीलिए वह दर्द का सम्पूर्ण वर्णन कर सकी। महादेवी की वेदना कल्पना से आती है पर मीरा की वेदना सीधे उनके जीवन से आती है। इसीलिए मीरा की वेदना जहाँ आत्मा के तारों को झनझना देती है वहाँ महादेवी की वेदना केवल कौतूहल उत्पन्न करती है।

मीरा में एक ~~साथ~~ साथ ही भावाभिव्यक्ति की भावुकता, संगीत की माधुरी और कविता का सहसंयोजन है। परम दीवानी मीरा की कविता हिन्दी साहित्य के मधुवन को युगों-युगों तक गुंजित रखेगी।

मीरा की भाषा में गुजराती, पंजाबी तथा राजस्थानी शब्दों का काफी प्रयोग हुआ है। कई भाषाओं के शब्दों का प्रयोग इनकी भाषा में होने के बाद भी इनकी भाषा की सरलता, सरसता एवं भावाभिव्यक्ति में कोई कमी नहीं है। भावाभिव्यक्ति और संगीतात्मकता के बाद मीरा के हाथों में पड़कर गीत एक बार फिर चमक उठा है। मीरा के पदों की गेयता एवं मधुरता इनकी लोकप्रियता का आज सबसे बड़ा कारण है। इसके साथ ही इनका गीत राजों से युक्त भी है। वस्तुतः मीरा हिन्दी की एक विलक्षण कवयित्री है हिन्दी साहित्य को इन पर गर्व है।